सद्‌गुण ही श्रेष्ठता का मापदण्ड

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है। यदि उसे समाज से अलग कर दिया जाए तो उसका जीवन कठिन हो जाएगा। समाज से वह बहुत कुछ प्राप्त करता है। सभी प्रणियों में मानव में ही चेतना का विकास सबसे अधिक है। इसलिए वह श्रेष्ठ है। सद्‌गुण ही श्रेष्ठता का निर्धारण करता है। सद्‌गुण ही व्यक्ति और समाज को आगे बढ़ाता है। जैसे गाड़ी में डिब्बे हों किन्तु इंजन न हो तो गाड़ी नहीं चल सकती। वैसे ही समाज को आगे बढ़ाने के लिए इंजन के रूप में सद्‌गुण है। समाज व्यवस्था में सद्‌गुण ही श्रेष्ठता का मापदण्ड है। सद्‌गुण पुण्य है और दुर्गुण पाप है। ये दो दिशाओं में चलने वाले मार्ग हैं। व्यक्ति मार्ग पर चलने के लिए स्वतंत्र है जो जिस मार्ग पर चलता है, मार्ग की अच्छाई और बुराई का उस पर प्रभाव पड़ता है। एक मानव अच्छे मार्ग पर चलेगा तो उसे अच्छा फल प्राप्त होगा। अच्छाई और बुराई व्यक्ति सापेक्ष हैं। समाज व्यवस्था के सम्बन्ध में भी यह नियम लागू होता है। सहनशीलता, त्याग, वैराग्य, प्रमोद भावना, झूंठ न बोलना इत्यादि सद्‌गुण हैं। हिंसा, भ्रष्टाचार, चोरी इत्यादि बुराई एवं दुर्गुण हैं। जो व्यक्ति सद्‌गुणों को अर्जित करता है और दुर्गुणों को छोड़ता है उसका उतना ही विकास होता है। आज के युग में परिवार क्यों टूटते जा रहे हैं? इसका कारण है सहनशीलता की कमी। आज कोई किसी को सहना नहीं चाहता। इसलिए परिवार भी खण्डित होते चले जा रहे हैं।

मानव जीवन में संस्कार की शिक्षा परिवार से प्राप्त होती है। परिवार नागरिकता की प्रथम पाठशाला है। संस्कारों से ही सद्‌गुणों का विकास होता है। संस्कार मानव जीवन के श्रृंगार हैं। संस्कार का अर्थ है अच्छे ढ़ंग से किया हुआ कार्य। पूर्व के जन्मों में मानव ने जो अच्छे–अच्छे कार्य किये है उसका परिणाम वह वर्तमान जीवन में भोगता है। पूर्वजन्म के कर्म जब उदय में आते हैं तब मनुष्य से अच्छे कार्य करता है। बुद्धि कर्मानुसारिणी होती है। बुरे कर्म होते हैं तो बुरे संस्कार उदय में आते हैं। यदि अच्छे कर्म होते हैं तो अच्छे संस्कार उदय में आते है हर जीवित प्राणी में दश संज्ञाएं होती हैं। इन संस्कारों के वशीभूत होकर मनुष्य

अच्छी योनी में जाता है। जन्म से लेकर मृत्यु के बीच का समय जीवन कहलाता है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जन्म के साथ मृत्यु निश्चित हो जाती है। सुसंस्कारों से ही जीवन में शांति प्राप्त होती है। शांति प्राप्त होने पर ही आदमी प्रसन्नता से रहता है। दिमाग में बुरे विचार न आना, किसी से टकराव न होना, शांति कहलाती है। संस्कार सबसे पहले बच्चों में माता के द्वारा दिया जाता है। जैसा संस्कार उसे दिया जाता है बच्चों में वैसा संस्कार आ जाता है। परिवार का वातावरण भी बच्चों को सुसंस्कारित करता है। बच्चों को दिमाग साफ स्लेट के समान होता है। उसको हम जैसा बनाते हैं वैसा बन जाता है। सुसंस्कारों द्वारा जीवन में शांति और प्रसन्नता आती है।

सादा जीवन उच्च विचार भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। यहां के ऋषियों, मुनियों, महर्षियों ने एकान्त में रहकर कन्दमूल फल खाकर नदियों और झरनों का पानी पीकर स्वस्थ तन, मन के द्वारा जो चिन्तन दिया है वह भारतीय साहित्य का आधार स्तम्भ है। महर्षि वेदव्यास, महर्षि वाल्मीकि, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, गोस्वामी तुलसीदास जैसे महापुरुषों ने जो विचार दिये हैं, आज पूरा भारत उसी पर चल रहा है। रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत्, रामचरितमानस, आगम और त्रिपिटक भारतीय साहित्य की धरोहर हैं। इनमें उच्च विचारों का प्रतिपादन है। जिसका अध्ययन अध्यापन करके भारतीय मनीषा जीवित है। इन महापुरुषों ने राजमहल को त्यागकर साधारण जीवन जीने का निर्णय लिया। इन्होंने संसार के सत्य को खोजा और सामान्य जनता में इसका उपदेश किया। उन्हीं के दिखाये हुए मार्ग पर आज पूरा विश्व चल रहा है। मानव जीवन बड़ा ही अमूल्य है। मानव जीवन को पाकर यदि कोई इसको व्यर्थ में गंवा दे तो उसका जीवन निरर्थक ही रहता है। बड़े भाग्य मानुष तन पावा अर्थात् मनुष्य का शरीर बड़े पुण्य कर्म के पश्चात् ही प्राप्त होता है। मानव जीवन बड़ा ही दुर्लभ है। चौरासी लाख जीवन योनियों में यह सर्वश्रेष्ठ है। मानव तन पाकर यदि मानव में मानवता का विकास न हो तो वह पशु से भी वदतर है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर एक दूसरे के सुख–दुःख से प्रभावित होना उसका धर्म है। यही कुछ ऐसी बाते है जो कि मानव को अन्य पंचेन्द्रिय प्राणियों से अलग करती है। मानव का सार है मनुष्यता, जो हर

मनुष्य में पायी जाती है। इसे सुरक्षित रखना और सभी प्राणियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाये रखना मानव का परम कर्त्तव्य है।

मानव एक धर्मनिष्ठ प्राणी है। उसे अपने मन को शिव संकल्पों से युक्त करना चाहिए। धर्म इसी आवश्यकता का प्रतिपादन करने के लिए है। मन को सत्यम् से, वाणी को शिवम् से और चरित्र को सुन्दरम् से युक्त करने का उपक्रम है धर्म। मनुष्यता ही मानव को सर्वोच्च स्थान प्रदान करती है तथा मानव प्रकृति के उस पक्ष पर बल देती है जो प्रेम, मैत्री, दया सहयोग के रूप में अभिव्यक्त होती है। इसके अंतर्गत व्यक्ति की संवेदना व दया, करुणा का भाव समस्त सृष्टि के जीवधारियों के लिए होता है। अतः अहिंसा इस दर्शन की प्रतिष्ठा के लिए सबसे अनिवार्य शर्त हैं। मानव जीवन में कर्म को पूर्ण महत्व दिया गया है।